



## मेरी अभिलाषा है

- द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी

इस कविता में सेवा, त्याग, सहनशीलता, दृढ़ता आदि जीवन-मूल्यों को अपनाने का संदेश है।

सूरज-सा दमकूँ मैं  
चंदा-सा चमकूँ मैं  
झलमल-झलमल उज्ज्वल  
तारों-सा दमकूँ मैं  
मेरी अभिलाषा है।

फूलों-सा महकूँ मैं  
विहगों-सा चहकूँ मैं  
गुंजित कर वन-उपवन  
कोयल-सा कुहकूँ मैं  
मेरी अभिलाषा है।

नभ से निर्मलता लूँ  
शशि से शीतलता लूँ  
धरती से सहिष्णुता  
पर्वत से दृढ़ता लूँ  
मेरी अभिलाषा है।

